

DPN 6362

Title : भारत सावित्री / BHĀRATA SĀVITRĪ

Run. No. 7053

Cat. No. 10

Micro. No.

Subject Stotra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 13.7 x 6

Folios 26 Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator ३. वीरनाथ

इन्द्रपति ← Scribe / donor

डा. कमलप्रकाश मल्ल

Date: NS / SS / VS / KS 934

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

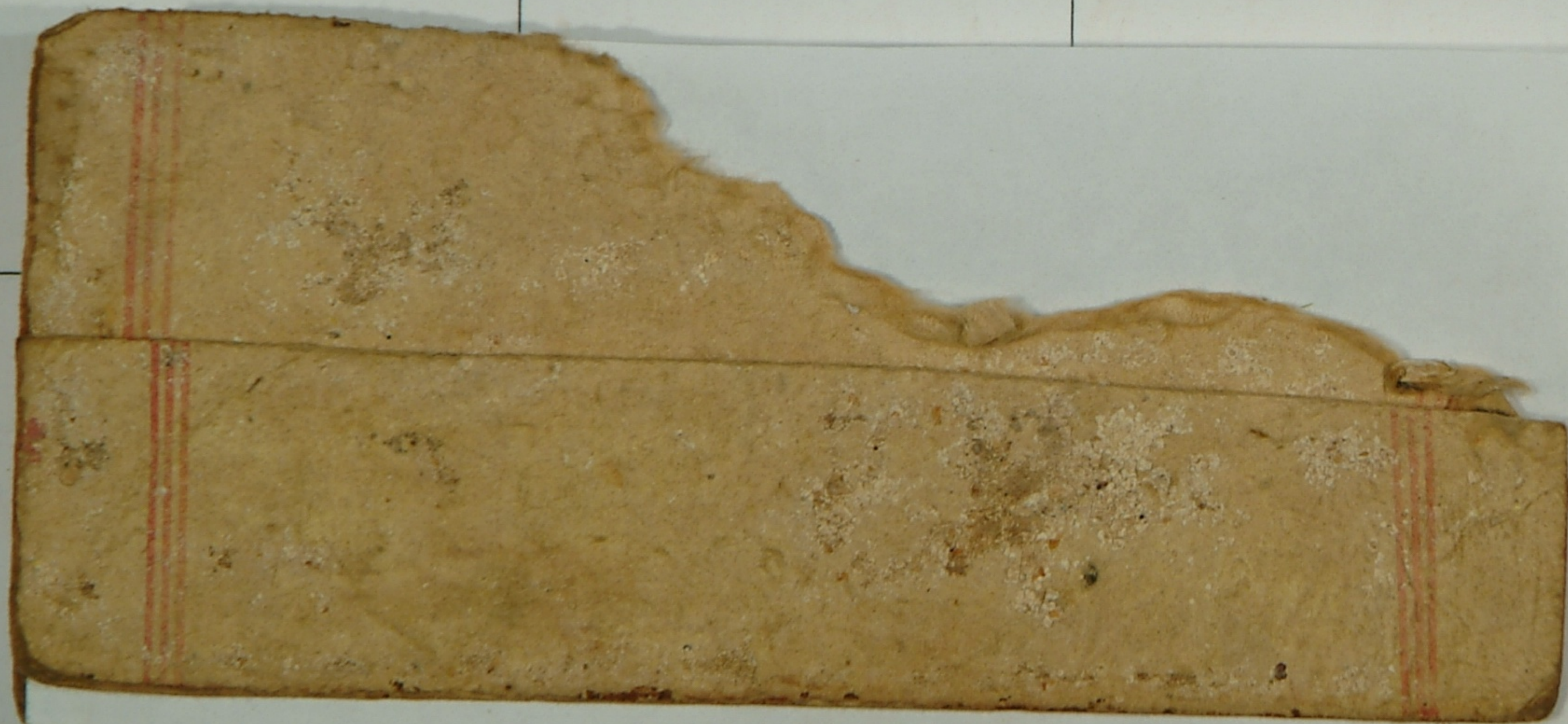
१. इति श्रीभारत सावित्री समाप्त ॥ २. श्रीनाथ चरनपादुका नमस्तुत्ये नमामिहं समाप्तं ॥
२. इति शारदादेवि द्वादशनामं त्रैलोक्यं समाप्तं ॥ ३. इति श्रीविरनाथविरचितं
भिमसेनत्रैलोक्य संपूर्णं समाप्तं ॥ ४. इति लिंगाष्टक समाप्तं ॥ ५. [नवग्रहस्तोत्र]

1. श्री संवत् ५३४ वैशाख शुद्ध त्रयोदशी मंगलवार एव पुन
र्दस चारि इन्द्रपतिन एव शुभ दोय चुनका जुरो ॥

10

5

5



5

10

15

CMS

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20



॥ २३ ॥ नमो ह्य

ना ॥ श्री वाच ॥ ब्रह्मसंज्ञाय

वी माहात्मनां । याद्युवानां कनूषा ॥ सुखं वेह

महाद्वय ॥ १ ॥ कनूषायाध्याकं वक्तुमा

हावला म हात्र थाचक मरु कथन विनियानि

ना॥ १॥ ही वम डा लो क थं ह लो क र्क स लो क
 थं ह लो क र्क उ लु म म म न्या ला क थं दू या धि ना ह
 न॥ ३॥ **हं कृ य व वा व** ॥ अ हं क र्क य व क र्मि
 सर्व य य क र्म व व न धू यो क र्म क र्म क र्म क र्म

यद्वं य व ल न ॥ ७ ॥ अ
 क र्क म मा य ना क र्क व ४ न व ल ४ स ह द व न्ध म य
 क र्क य धि वि त्र ॥ ८ ॥ ही म स ना वि ना ट न्ध य
 द न्ध म हा त्र थ ४ ध क क र्क ४ नि र व न्धु च क र्क मि
 ना क र्क वी र्क वा न् ॥ ९ ॥ ही ह डा डो य द या न्ध

अहिमन्युर्माहावल ४ याहुवा नीवला याधा ४
 सवे विक्रय नाकुमा ॥ १० ॥ कोन वा नावलया
 धा ४ सवे तानीक विक्रमा ४ दाक्ष दाक्षि ४ रुय ४
 कलो वसुसनाथ यलंदूष ॥ ११ ॥ हविशवा
 वाङ्गीका हगदहसुयेव

लीया ४ कनवर्मा जयदुध ॥
 अमिठिन्दु याथिव नाजक वरु तानीव
 दले नमदावेधा ॥ १० ॥ येक लना विक्रमि
 कलिं कनयेवच दूद्वन्य दूवाधु कादू जय ४
 सिंहक मयी ॥ ११ ॥ दूमूरवा दूर्माना येव दूर्लला

दूत्रिनी कृक ४८ ४ मासना विविचु म्भना जा दू
 आधनयुत् ॥ १२ ॥ अने दा रिं मना आधन ननेय
 नि कीर्हिता ४४ दूआधन सहाया र्थ आदू कामा
 समागता ॥ १३ ॥ आदियव सहायव य वीन द्ध
 केमवव विना टयव विहूय च लु र्थ तन थन घट ॥

॥ १४ ॥ उद्याग यक् मय वृत्त ॥ ४५ ॥
 कर्म डात यवीर्य कर्ह यवीर्य मय ४५ ॥ १५ ॥
 नवम मलय यवीर्य सौ लिक मत ४ यत्र ४ मी य
 वेका द म आर्क दाद म मनि यवर्क ॥ १६ ॥ उ
 था द म महा यव आनू सा सनिक यून ४ आम्भम

धि कय नो कं उरु दम मत्त ४ यत्री ॥ १० ॥ आश्रमा
 वास य वरिषी ॥ हू ययं ५ दमं गुरुं वा उमं सो
 मलं पर्व महा युक्ता निकं यून ॥ १८ ॥ धर्मनामस
 हानिते ४ यार्ह्यु रस्य धिमत्त ४ हू यं मक्का दमं यः
 व. स. म्मा दानिकं गुरुं ॥ १२ ॥ ४३ तिक नित्य वा

कंदर्पवर्णममहाहृतं ४४ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 साहसकथितातिवै ॥ २० ॥ इमन्तु यथममासः
 उथादस्यासितनित्यो यवर्तलानतचूडनकुरु
 यमदेवत ॥ २१ ॥ अशुनादूनयास्यादावायोः
 लघूदस्तक ४ ॥ कल्लुदरुयहानीचिह्निर्युक्त

साह्यकी ॥ २२ ॥ नृकधाग्रहवासा ॥ सन्धाने द
 भक्षणा ॥ युक्तिके भक्षया निया नयनिस
 हस ॥ २३ ॥ भूतनवावसायनयाहि न्यनवन
 नवहीमसेनसमानासिसेनमात्रहथात्रयि ॥ २
 ॥ २४ ॥ नर्थत्रयनथाहन्ताकृ ऊर्लकृ भूतनवन

थरुसमप्रजातासाकादेवयूनवना ॥ २५ ॥
 यानकीत्रविभनाहीमनामिन्नजसा ॥ २६ ॥
 हानहनाहीष्ठा ॥ कृष्णस्यमसामनी ॥ २७ ॥
 ॥ नवमावृषसेनभूमिभिन्दूकयसुथनमि
 दिनचसोहृष्टविनाटादूयदाहना ॥ २८ ॥ यध

माहात्रयान्द्राहावाथ्यमहाधामना, आशात॥
 यलिनम्भकोवर्षस्याभानियं कुव॥ २८॥ नहाय
 विसर्गिद्राहावृद्ध ४ वाडमवर्षवत् ४ दमम्याः
 रगदहायिनिहनाथजयदुथ॥ २९॥ इति
 वाश्ववाङ्गीकासामदहायलवष ४२ कान्द

दिनकवृद्धाविनाद्यटाकव॥ ३०॥ कान्द
 मलानाजन्महावासवदम्भा ४ दमम्याः
 ध्वाङ्गीकावाथ्यमहाधामना॥ ३१॥ दम्भसन
 सुयादम्भविचिन्नायिनाहाहनचहुदस्यानुरम्भा
 याहनकर्णमहावन॥ ३२॥ वासुदेवसहायन

नृणां गच्छावधनना, निसृष्टं यथा, ह नयूद्धं वीमाः
 यथास्तदयथा, नृणां गच्छावधनना ४ नृणां गच्छावधनना, सूर्य
 सूर्य, नदिना, वृद्धं गृहना मि वचदहीनं ॥ ३३ ॥
 मूर्ययद्यवद्वत्तमरा, यून्या यिन, यनात्कं ता ४ नृणां
 वकोत्रवी सना, क गृहीना, नृणां गच्छावधनना ॥ ३४ ॥ न

सिद्धिनामहायूद्धमादि, नृणां गच्छावधनना ४ नृणां
 वाग्धनं हन ४ नृणां गच्छावधनना, क हन्यायिव ॥ ३५ ॥ न
 नादिना वसानव, ना जा दूर्या धना हन ४ नृणां गच्छावधनना
 महावा जहिस सन निया गित ॥ ३६ ॥ नृणां गच्छावधनना
 धनन नृणां गच्छावधनना ४ नृणां गच्छावधनना, योर्धवानां महा

निर

ल श्री तूसा हा विजया रवत ॥ ३० ॥ दिनानि द
 गरीया सदा गम्भ हाय ॥ दिन दयनु कर्कस
 गल्य स्याद्विदिनं कथा ॥ ३१ ॥ दिवसाद्विदिनं गदायुद्ध
 वृद्धयत्रमदा नूनं हृत्कृत्वा न गदा द्या ननु
 मयि मभवका ॥ ३२ ॥ आचार कृतमका मि

विग्रहं रत्र न वरुत सिद्धे वनराजा, धामना
 होयिका हन ॥ ३३ ॥ धक दूमा हनरु उ मि
 म्माव मा हावल ॥ ३४ ॥ दोय दया म्मा वा कला ननेस
 वनि याति ना ॥ ३५ ॥ ॥ धक ना सु उ वाव ॥
 कथं दूया धना गा जाली महेतन याति न ॥ ३६ ॥

क्रीदितो दभे काचममयूखसुवादिनी ॥ ७२ ॥
 ॥ दालिभति सह श्रुत्या दुःखनाद सिनामयिल
 कुभकं यदा तिनी सह भुनियुर्नव ॥ ७३ ॥ सं
 दिक सह सुस्यानुव गना समासन ४१ नवा क्री
 दिनी तु कसेव च काद गारवत ॥ ७४ ॥ ॥ हं ॐ

यउवाच ॥ प्राप्ताद्य वचय ॥ ७५ ॥ ॥ वृत्तम
 नयसि वृत्तयक दुर्लभं तथा जना जनधर्मा र्त्तना कु
 ४ यनक्ति ॥ ७६ ॥ ॥ प्राप्ताद्या विंशति गवा
 जवा क्रियदा नय ४१ यकाये सुनया ४ गवा ४
 यूर्द्धका रनित्र कु ॥ ७७ ॥ ॥ सुत्र ला शान्न स

नमो भगवते वासुदेवाय
 वनिर्न सवनिचमु विना नमो भगवते वासुदेवाय
 श्री ॥ ७० ॥ अथ भगवत्पदिना जल युक्ता सुविनि
 याति मा ७१ ॥ अथ भगवत्पदिना जल युक्ता सुविनि
 ना ॥ ७२ ॥ यदि कृत्वा कुरु कुरु श्रुय कृत्वा ज
 नादन दूयाधनं यशु कृत्वा अतिमर्त्यका दनं

॥ ७३ ॥ न कुरु जल सस्का न एत न च शना एत न
 हातात्र म शसैन कृत्वा य जमानी यधि मित्र ॥ ७४ ॥
 ॥ ७५ ॥ गगुर्वं अशुर्वं कृत्वा रुचमान य ना जस
 अ जकि क मि वदु य मह मे का वि व अ मि ॥ ७६ ॥
 सर्व क्रति मय के रु कुरु कुरु मा हा के य न हा

कर्तुं वर्यं ह्यदीर्घायां यूपिष्येत् ॥ ४२ ॥ आ
 र्यानुक्रमहायं विस्तृतं ननु सक्तं सक्तं यनम
 याख्यातं न ह्यननमस्यत ॥ ४३ ॥ इति लालनः
 सावित्रि शान्तलुक्ताय ॥ ४४ ॥ यत्पुदिवा वायुदिवा
 नाशो सप्तमं विसृज्यते ॥ ४५ ॥ अमृतं यदवाप

यत् कुरु क्रियायिवा न ह्य ॥ ४६ ॥ यत्पुदिवा वायुदिवा
 डिङ्गुगुक्ति ॥ ४७ ॥ यत्पुदिवा वायुदिवा
 कात्र सदा यत्पुदिवा वायुदिवा
 नित्यं च ॥ ४८ ॥ अहो नाशु कर्तुं यत्पुदिवा
 विनश्यति ॥ ४९ ॥ अहो नाशु कर्तुं यत्पुदिवा

ति ॥ ४० ॥ श्रीमान्वातसावित्रीनिर्वाणमिवाय
 ॥ ४१ ॥ एतन्नामिवासाय ॥ ४२ ॥ यमसाय ॥
 ॥ ४३ ॥ अहमिहमदानां हतलह ननन ॥ ४४ ॥
 यवात्राय स कानधनधान्यादिसम्यद ॥ ४५ ॥
 ॥ यन्यसुखकीर्ति ॥ ४६ ॥

यायेविसुखासावित्रीक
 ॥ ४७ ॥ तिग्वातसावित्रीसमाय ॥ ४८ ॥
 ॥ ग्रासवर्त ॥ ४९ ॥ येसाहसतीर्दमि मंगलवान
 थषूनुद ॥ ५० ॥ धात्रि ॥ ५१ ॥ यमिनथगद्रवायधनका
 शनागुहकल्याण ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥

15

10

5



5

10

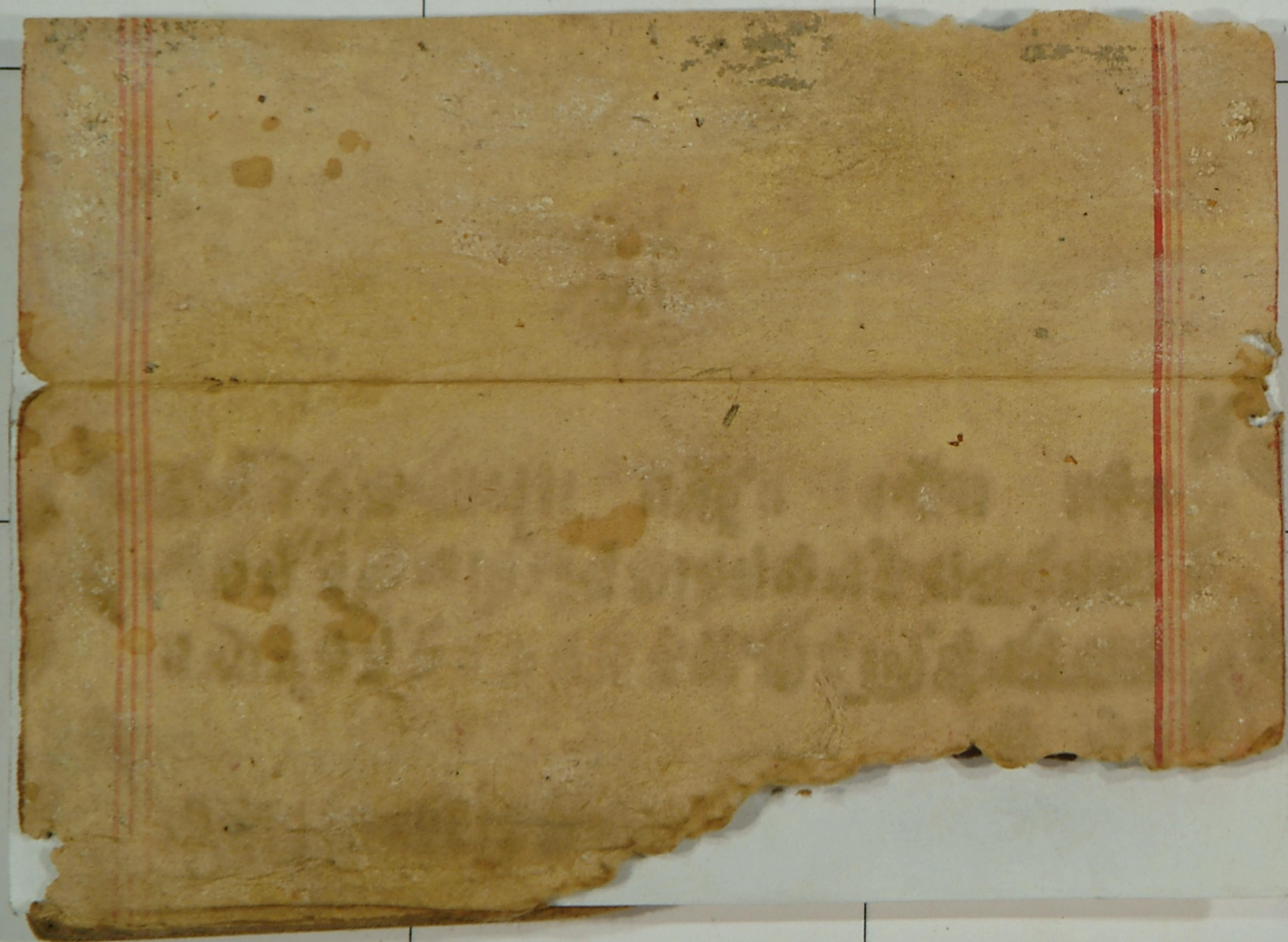
15

20

15

10

5



5

10

15

20



ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ नमः आदिसुगु
 रूपा ॥ ॥ अतिरुद्राय नमः ॥ अतिरुद्राय नमः ॥ अतिरुद्राय नमः ॥
 सिद्धिस्तु ॥ अतिरुद्राय नमः ॥ अतिरुद्राय नमः ॥ अतिरुद्राय नमः ॥
 अतिरुद्राय नमः ॥ अतिरुद्राय नमः ॥ अतिरुद्राय नमः ॥ अतिरुद्राय नमः ॥
 अतिरुद्राय नमः ॥ अतिरुद्राय नमः ॥ अतिरुद्राय नमः ॥ अतिरुद्राय नमः ॥

ॐ

जिथानाजानि ॥ नालेनेमाना ॥ नालेनेमाना ॥
 वननत्रहेद ॥ पुत्रकासाकात नत्रखदव ॥ श्रीना
 थनाथसत्रनेहजहे ॥ २ ॥ शुभनेवृक्षानेसदा
 लावक्षनेऽत्रहितनेवामे सदासिद्धिआशिवक
 वकविमाने ॥ सदाहाननयहेने अकवत्रपिनि

रिच्छा अकलुनिवासी ॥ यत्रवक्रगाका दंतलभ
 नखद ॥ श्रीनाथनाथसत्रनेहजहे ॥ ३ ॥
 ॥ सनतयिनेनचधंहुवत्रजानिसत्रय अतिसे
 मत्रय गुनाकात्रदवसेकजंत आहानयूनत्रदे ॥
 आहनिमंकुकरहव यत्रवक्रगाका तल्लनखद

वे॥ श्रीनाथनाथसुत्रनेरुजुद॥ ७ ॥ यदादञ्ज
 दिनग्रहमेक॥ कसव, अहा मातुन कुतं कयंति॥
 कात्रहंदाकात्र॥ जामिंयुद्धं॥ यत्रवृक्षसाक्षात्
 गत्रयदव॥ श्रीनाथनाथसुत्रनेरुजुद॥ ८ ॥
 अहं अहं, महादूषदं॥ श्रीनाथनाथं

वरनाथं॥ यत्रवृक्षसाक्षात् गत्रयदव॥ श्रीना
 थनाथसुत्रनेरुजुद॥ ८ ॥ विरुतं विरुतं, महा
 नाथवाजं॥ यजान अत्यास, सिद्धिनाथं सनाथं॥ य
 त्रवृक्षसाक्षात् गत्रयदव॥ श्रीनाथनाथसुत्रने
 रुजुद॥ ९ ॥ विदवं, विमकं, विमकं विनाथयि

२॥ नमः ॥ वृका दयाय नमः ॥ ४ ॥ तद्वनमालकद्वय
 रव्या न दया यूने दर्ले अकृष्णं वा सख्यं मिने ॥ हिमस
 नयनमामिदं ॥ १ ॥ नेशा कहि खर्तु हिमसनन
 कर्षु सखि नै सत्रनै कममामिति गदा दस्तन
 मामिदं ॥ २ ॥ त्रैलोक्यमहा हिमं काधनूयै ॥

दाधनै दूयति सति रुक्मं चरु रुक्मं नमामिदं
 ॥ ३ ॥ दसासन विनास्य के किंच कयानमै दर्ने
 विनास काधदुस्ति ॥ सलुमै दर्ने नमामिदं ॥ ४ ॥
 कृतिनाम महादवि बलवासनमस्तुत्यं अरुनाय
 लयि सै रुक्मं ॥ ॥ अरुनाय नमामिदं ॥ ५ ॥

दूजा धनसहाशुर्व्या नयीति दूजा वनसु सुपुत्रा
 नासु च कृति चरुनमामिदं ॥ ८ ॥ नानाललल
 विनै चैव नमामि सुसहितं कृदलत्रलसैरु सुक्तं
 वदयनमामिदं ॥ ९ ॥ हिममनमदादवेमम
 अकनूना कनैममसहयनामि ययायया ननमा

मिदं ॥ ८ ॥ ॥ कृति विप्रनाथ विप्रविनै हिम
 मनका सुसैयुक्तसैमार्क ॥ ९ ॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ नमः सिकाय नमः ॥ ॥ वक्रमनात्रि
 सूत्राचित त्रिं ग ॥ ॥ नमः त्रिं ग ॥ ॥
 ॥ जलमादिदूखविनासन त्रिं ग ॥ ॥ नयनमामि स

सिवर्त्रिंशत् ॥ ^१सिद्धिसूत्रासूत्रवद्विनाशना ॥
 ॥ सृष्टिसूत्रं च विनयितुं त्रिंशत् ॥ ॥ रुद्रसदायत्रमा
 ॥ ह्रस्वत्रिंशत् ॥ ॥ तं पुनरामिसदासिवर्त्रिंशत् ॥ ॥
 ॥ गुरुशुक्रसूत्रं च विनयितुं त्रिंशत् ॥ ॥ यं कुरुशुक्रसदायत्रमा
 ॥ त्रिंशत् ॥ ॥ इनामत्रविनाशना ॥ ॥ तं पुनरामि

विन २

॥ त्रिंशत् ॥ ॥ यं च न कुरुशुक्रसदायत्रमा
 ॥ ॥ संप्रदायविनाशना ॥ ॥ शंकररुद्रसदा
 ॥ त्रिंशत् ॥ ॥ तं पुनरामिदं सदासिवर्त्रिंशत् ॥ ॥
 ॥ यं कुरुशुक्रसूत्रं च विनयितुं त्रिंशत् ॥ ॥ कुरुशुक्रसदायत्रमा
 ॥ त्रिंशत् ॥ ॥ मन्त्रिवत्रसविनयितुं त्रिंशत् ॥ ॥ तं

युनमामिसदाशिवलिंगं ॥ दय ॥ गायन
 लिंगं ॥ नावनंदयविनासनलिंगं ॥ कामबी
 नासनकाशनलिंगं ॥ नयुनमामिसदाशिवलिंगं
 ॥ ॥ गनयशिवकृतसाहितलिंगं ॥ दिनकर
 कातिसहलिंगं ॥ त्रिनमिदं उगतलिंगं ॥

॥ नयुनमामिसदाशिवलिंगं ॥ ॥ अयदि गाय
 त्रममिसूरिंगं ॥ ॥ शिवसमूहकाशनलिंगं ॥
 ॥ कलितपायवीनाशनलिंगं ॥ नयुनमामिसदा
 शिवलिंगं ॥ ॥ लिंगावकदिमांदपूष्यययथुक्ति
 सनि ॥ सर्वपायविनिमूर्कशिवनमोदने ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमः

गदल ॥ ॥ यदा सनः दौये नरु समदूति मिफा ॥

यसि सुद्विहर्ज ॥ स्यात् सदात्र वि ॥ १ ॥ ॐ नमः

नवधना द ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ गदाया ति दिवाह व

कुरुया वनद गणि ॥ २ ॥ नरु मा स्या वनधना अकि

शुत्र गदाधन ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ स्याधना शु

त ॥ ३ ॥ यित मा स्या वनधना क धि कात्रयन दति

रु र्ध्वम गदाया ति ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

कुरु ता रु स्या यि नृदं ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

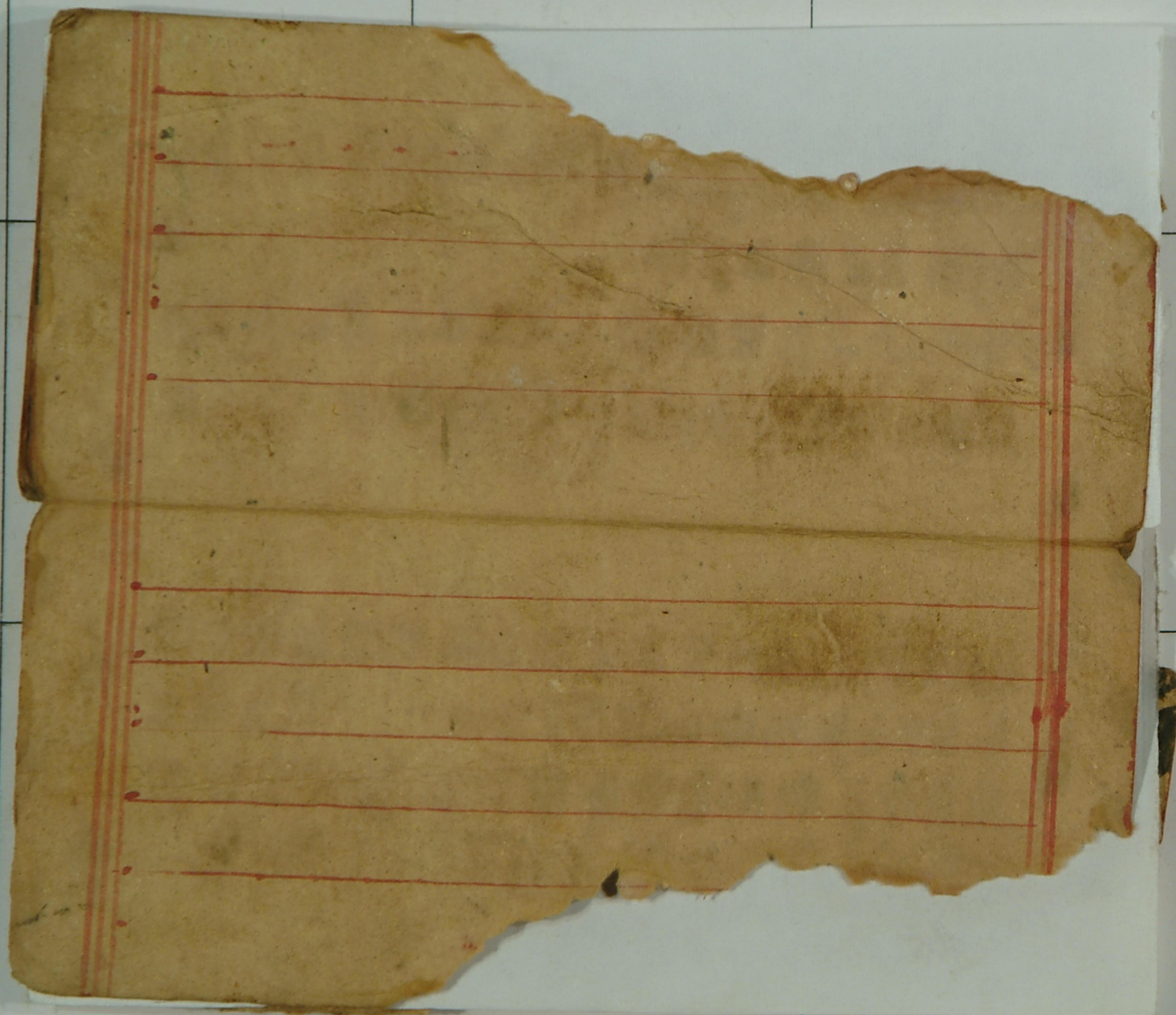
हसूत्रमैतिवयद ॥ ५ ॥
 लातायुतुह आ ४ दंतितायनदयेव सा आसूकमसुत्र
 ॥ ५ ॥ वीदु नित्रयसूत्रयवदा ज्ये वादन ४ वन
 धवाधनयव कुयालासूत्र ॥ १ ॥ कनात्र
 वदनं यानं रा ज्येवमधन कले तिलसियासन ह्ये

नाद्वंशमदावर्न ॥ ६ ॥ धमादिवदवानिलेसर्व
 नविनातानन ४ वृद्धासनगतानिले कुदवामदा
 वन ॥ २ ॥ २५ नमः ॥

15

10

5



10

15

20

0 CMS

5